अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग–2)

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
III	HIN 5301	प्रश्नपत्र 9 : सामान्य स्तर –आधुनिक काव्य 1	04

एम.ए. (हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्नपत्र 9 : सामान्य स्तर
आधुनिक काव्य 1
(महाकाव्य तथा खंडकाव्य)
PAPER CODE : HIN 5301

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

पाठ्यक्रम

(शैक्षिक वर्ष : 2020–21 से)

उद्देश्य :

1. छात्रों को आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय कराना।
2. छात्रों को आधुनिक काल के प्रबंध और मुक्तक काव्य के तात्विक स्वरूप की जानकारी देना।
3. आधुनिक युग में इन काव्य प्रकारों के विकासक्रम का परिचय देना।
4. छात्रों को आधुनिक काव्य प्रकारों के तात्विक स्वरूप एवं विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में रचनाओं के आस्वादन, अध्ययन और मूल्यांकन की दृष्टि देना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग।
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन।
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

(1) कामायनी : जयशंकर प्रसाद

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

केवल 'चिंता', 'श्रद्धा', 'इड़ा' तथा 'आनंद' सर्गों का अध्ययन

अध्ययनार्थ विषय :

1. 'कामायनी' की कथा में इतिहास और कल्पना
2. 'कामायनी' में चरित्र–चित्रण
3. 'कामायनी' में रूपक तत्व
4. 'कामायनी' का महाकाव्यत्व
5. 'कामायनी' की दार्शनिकता
6. 'कामायनी' का कला पक्ष–भाषा, अलंकार, छंद विधान

(तासिकाएँ 30 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 02)

(2) गोपा गौतम : जगदीश गुप्त

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

अध्ययनार्थ विषय :

1. खंड़काव्य का स्वरूप और विशेषताएँ
2. गोपा गौतम खंड़काव्य की कथावस्तु
3. गोपा गौतम खंड़काव्य का चरित्र–चित्रण
4. गोपा गौतम खंड़काव्य का उद्देश्य
5. गोपा गौतम खंड़काव्य में आधुनिकबोध
6. गोपा गौतम खंड़काव्य में चित्रित वातावरण
7. गोपा गौतम खंड़काव्य का शिल्प तथा कला पक्ष (भाषा, बिंब विधान, प्रतीक योजना और अलंकार)

(तासिकाएँ 30 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 02)

कुल श्रेयांक / कर्मांक = 04

———————————————

संदर्भ ग्रंथ :

1. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन – डॉ.द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
2. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ – डॉ नगेंद्र
3. कामायनी चिंतन – विमलकुमार जैन
4. कामायनी : एक नवीन दृष्टि – प्रो. रमेशचंद्र गुप्त
5. कामायनी : इतिहास और रूपक –सुशीला भारती
6. कामायनी विमर्श – भगीरथ दीक्षित
7. कामायनी कला और द"ान – राममूर्ति त्रिपाठी
8. कामायनी एक पुनर्विचार – गजानन माधव मुक्तिबोध
9. कामायनी पुनर्मूल्यांकन – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
10. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में महाभारत के पात्र – डॉ.जे.आर.बोरसे
11. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर – डॉ. संतोषकुमार तिवारी
12. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
13. मैथिलीशरण गुप्त के खंड़काव्यों का अनुशीलन – डॉ. योगिता हिरे
14. नई कविता – डॉ. देवराज
15. नई कविता – आ. नंददुलारे वाजपेयी
16. जगदीश गुप्त का काव्य विविध आयाम–डॉ. सुरेश शिंदे, अभय प्रकाशन, कानपुर
17. नई रचना और रचनाकार – डॉ. दयानंद शर्मा, अन्नपूर्णा प्रका.,कानपुर
18. जगदीश गुप्त का काव्य चिंतन और सृजन–डॉ. सुजीतकुमार शर्मा,श्यामा प्रकाशन, इलाहाबाद
19. काव्य परंपरा और नई कविता की भूमिका – डॉ. श्रीमती कमलकुमार, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली
20. नवधा– संपा. अज्ञेय, डॉ. जगदीश गुप्त, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
21. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर– डॉ. संतोषकुमार तिवारी

————————————————

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग–2)

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
III	HIN 5302	प्रश्नपत्र 10 : विशेष स्तर – भाषा विज्ञान	04

एम.ए. (हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्नपत्र 10 : विशेष स्तर
भाषा विज्ञान
PAPER CODE : HIN 5302
(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)
पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष : 2020–21 से)

उद्देश्य :

1. भाषा विज्ञान के अंगों एवं विभिन्न शाखाओं का परिचय देना।
2. भाषा विज्ञान के सैद्धांतिक पक्ष से अवगत कराना।
3. भारती आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकास क्रम की जानकारी देना।
4. हिंदी के शब्द भंड़ार एवं व्याकरणिक स्वरूप से परिचित कराना।
5. हिंदी के शब्द–भेदों के विकास क्रम का विवरण देना।
6. हिंदी के विविध रूपों की जानकारी देना।
7. साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट करना।
8. विकास के संदर्भ में देवनागरी लिपि की विशेष जानकारी देना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग।
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन।
5. भाषा प्रयोगशाला में प्रयोग।
6. परिचर्चा तथा अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप, भाषा के अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा विज्ञान का स्वरूप एवं व्याप्ति। भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ – वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक। भाषा विज्ञान की शाखाएँ – कोश विज्ञान, व्युत्पत्ति विज्ञान, लिपि विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान, मानक हिंदी का भाषा वैज्ञानिक विवरण (रूपगत), भाषा–भूगोल का सामान्य परिचय।
2. स्वन विज्ञान : स्वन विज्ञान का स्वरूप, स्वन विज्ञान की शाखाएँ – औच्चारिकी तथा श्रोतिकी, स्वन की परिभाषा और वर्गीकरण, स्वर वर्गीकरण– जिह्वा के व्यवहृत भाग, जिह्वा की उँचाई तथा होठों की आकृति के आधार पर/ मानस्वर, संयुक्त स्वर। व्यंजन वर्गीकरण –स्थान, प्रयत्न और घोषत्व के आधार पर।
3. स्वनिम विज्ञान : स्वनिम की परिभाषा और स्वरूप, स्वनिम की विशेषताएँ, स्वन और स्वनिम में अंतर, स्वनिमिक विश्लेषण। स्वनिम के भेद खंडात्मक, अधिखंड़ात्मक, स्वनिम, लिप्यंकन।
4. रूप विज्ञान :– रूप की परिभाषा और स्वरूप, रूपिम का स्वरूप, रूपिम के भेद – संरचना की दृष्टि से – मुक्त, बद्ध, संपृक्त रूप । अर्थ की दृष्टि से – अर्थदर्शी (अर्थतत्व), संबंधदर्शी (संबंधतत्व) । खंडात्मकता की दृष्टि से – खंडात्मक और अधिखंडात्मक ।

(1 से 4 तक तासिकाएँ 30 घंटे =श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट– 02)

5. वाक्य विज्ञान : वाक्य की परिभाषा और स्वरूप, वाक्य संबंधी सिद्धांत– अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद। वाक्य के अंग – उद्देश्य, विधेय। वाक्य के निकटस्थ अवयव। वाक्य विश्लेषण –मूलवाक्य, रूपांतरित वाक्य, आंतरिक संरचना, बाह्य संरचना। वाक्य के भेद – रचना, क्रिया और अर्थ के आधार पर।
6. अर्थ विज्ञान – अर्थ की प्रतीति, शब्द और अर्थ का संबंध। अर्थ बोध के साधन। अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ और अर्थ परिवर्तन के कारण।
7. भाषा विज्ञान और साहित्य – साहित्य के अध्ययन में भाषा–विज्ञान के अंगों की उपयोगिता ।

(5 से 7 तक तासिकाएँ 30 घंटे =श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट– 02)

कुल श्रेयांक / कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथ :

1. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान – डॉ. राजमल बोरा
3. भाषा विज्ञान की भूमिका–सैद्धांतिक विवेचन–डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
4. भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
5. भाषा विज्ञान– सैद्धांतिक विवेचन – रवींद्र श्रीवास्तव
6. भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा– द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
7. भाषा विज्ञान और भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
8. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. केशवदेव रूपाली
9. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. विश्वदेव त्रिगुणायत
10. भाषा विज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
11. सामान्य भाषा विज्ञान – डॉ. बाबूराम सक्सेना
12. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. कृपाशंकर सिंह
13. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ. रामकिशोर शर्मा
14. भाषा और भाषा विज्ञान – डॉ. तेजपाल चौधरी
15. भाषा–ब्लूमफील्ड (अनुवादक– डॉ. विश्वनाथ प्रसाद)
16. हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारीच
17. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास– डॉ. उदयनारायण तिवारी
18. हिंदी का उद्भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी
19. हिंदी की ग्रामीण बोलियाँ – डॉ. हरदेव बाहरी
20. हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप–डॉ.अंबाप्रसाद'सुमन'
21. हिंदी भाषा – कैलाशचंद्र भाटिया
22. हिंदी भाषा का इतिहास – डॉ. भोलानाथ तिवारी
23. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले
24. नागरी लिपि रूप और सुधार – मोहन ब्रिज

25 नागरी लिपि का उद्भव और विकास– डॉ.ओमप्रकाश भाटिया

26. नागरी की लिपि संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी
27. भारत की भाषाएँ – डॉ. राजमल बोरा
28. हिंदी भाषा का विकासात्मक इतिहास–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग–2)

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
III	HIN 5303	प्रश्नपत्र 11 विशेष स्तर –हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तक)	04

एम.ए. (हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्नपत्र 11 : विशेष स्तर
हिंदी साहित्य का इतिहास
(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तक)
PAPER CODE : HIN 4303

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

पाठ्यक्रम

(शैक्षिक वर्ष : 2020–21 से)

उद्देश्य :

1. छात्रों को युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर हिंदी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन तथा नामकरण का परिचय देना।
2. आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि कवियों और उनकी रचनाओं से परिचित कराना।
3. जैन, सिध्द, नाथ और अपभ्रंश साहित्य के प्रभाव से अवगत कराना।
4. युगीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक,साहित्यिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग।
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन।
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

स्वाध्याय के लिए विषय :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास द"ान
2. हिंदी साहित्य के इतिहास की लेखन परंपरा, पद्धतियाँ, प्रमुख इतिहास ग्रंथ, हिंदी के प्रमुख साहित्यिक केंद्र, संस्थाएं एवं पत्र–पत्रिकाएँ, सीमा निर्धारण,
3. हिंदी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण।

सूचना – उपर्युक्त तीन विषय केवल स्वाध्याय के लिए हैं।

श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट– 01

अध्ययनार्थ विषय :

आदिकाल :

1. आदिकाल का प्रारंभ – विविध आचार्यों की मान्यताएँ।
2. आदिकाल के नामकरण के विविध आधार और विविध नाम –चारणकाल, सिद्ध सामंत काल, बीजवपन काल तथा वीरगाथाकाल।
3. आदिकालीन पृष्ठभूमि / परिस्थितियाँ – सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक और उनका तत्कालीन साहित्य पर प्रभाव।
4. सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य और जैन साहित्य का परिचय।
5. रासो काव्य की परंपरा – 'रासो' शब्द के विभिन्न अर्थ, रासो के प्रकार – जैन, रासो, धार्मिक रासो, वीर रासो ।
6. आरंभिक गद्य तथा लौकिक साहित्य।
7. कवि विद्यापति का साहित्यिक परिचय।

(तासिकाएँ 15 घंटे =श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 01)

भक्तिकाल :

1. भक्ति आंदोलन के उदय के सामाजिक–सांस्कृतिक कारण, वैष्णव भक्ति की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आलवार संत, प्रमुख सम्प्रदाय और आचार्य, भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अंतः प्रादेषिक वै"ाष्ट्य।
2. भक्तिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि–सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक।

हिंदी संत काव्य : संत का वैचारिक आधार, प्रमुख निर्गुण संत कवि कबीर, नानक, रैदास, दादू, भारतीय धर्म साधना में संत कवियों का स्थान। हिंदी सूफी काव्य : सूफी काव्य का वैचारिक आधार, सूफी काव्य का स्वरूप और हिंदी के प्रमुख सूफी कवि।

3. सगुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ– रामभक्ति विविध संप्रदाय, रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि, हिंदी कृष्ण काव्य : विविध संप्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, अष्टछाप, प्रमुख कृष्ण भक्त कवि और काव्य, भ्रमरगीत परम्परा, गीति परंपरा और हिंदी कृष्ण काव्य – मीरा, रसखान।
4. भक्तिकालीन साहित्य की सामाजिक उपादेयता– कबीर और तुलसीदास के संदर्भ में।
5. भक्तिकालीन नीति साहित्य का परिचय और रहीम।

(तासिकाएँ 30 घंटे =श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट – 02)

रीतिकाल :

1. रीतिकाल के मूल स्रोत, रीतिकाल की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक परिस्थितियाँ।
2. रीतिकालीन साहित्य पर संस्कृत साहित्य तथा भक्तिकालीन हिंदी साहित्य का प्रभाव।
3. रीतिकाल के विविध नाम और उनके आधार,रीतिकालीनसाहित्य–रीतिबध्द, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त काव्य की विषयगत और शैलीगत प्रवृत्तियाँ।
   1. रीतिकाल का शृँगारेतर साहित्य–भक्ति, वीर तथा नीति, रीतिकाल में लोकजीवन।
   2. रीतिकालीन प्रमुख कवियों का परिचय– केशवदास, देव, चिंतामणि, सेनापति, मतिराम, पद्माकर, घनानंद।

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

(तासिकाएँ 15 घंटे =श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट – 01)

————————————————

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – संपा. डॉ. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास– डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
4. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
5. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
6. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्यामचंद्र कपूर (प्रभात प्रकाशन,दिल्ली)
7. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
8. हिंदी साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ – डॉ. गोविंदराम शर्मा
9. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशनप्रसाद खंडेलवाल
10. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबू गुलाबराय
11. आधुनिक साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
12. हिंदी साहित्य की भूमिका – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
13. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामकुमार वर्मा
14. हिंदी गद्य : उद्भव और विकास – डॉ. उमेश शास्त्री
15. हिंदी साहित्य : एक परिचय – डॉ. त्रिभुवन सिंह
16. हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास– डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
17. हिंदी रीति साहित्य – डॉ. भगीरथ मिश्र
18. रीतियुगीन काव्य – डॉ. कृष्णचंद्र वर्मा
19. रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेंद्र
20. हिंदी रीतिकालीन पर काव्य संस्कृत काव्य का प्रभाव– डॉ. दयानंद शर्मा
21. आधुनिक हिंदी साहित्य का आदिकाल – श्री. नारायण चतुर्वेदी
22. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिवकुमार शर्मा
23. हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास – डॉ. सभापति मिश्र
24. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. माधव सोनटक्के
25. हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास – डॉ. मोहन अवस्थी
26. हिंदी साहित्य का सही इतिहास–डॉ. चंद्रभानु सोनवने,सूर्यनारायन रणसुभे

————————————————

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग–2)

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
III	HIN 5304	प्रश्नपत्र 12 : विशेष स्तर – वैकल्पिक आधुनिक हिंदी आलोचना	04

एम.ए. (हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्नपत्र 12 : विशेष स्तर
वैकल्पिक : (अ) आधुनिक हिंदी आलोचना

PAPER CODE : HIN 5304

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट= 04)

पाठ्यक्रम

(शैक्षिक वर्ष : 2020–21 से)

उद्देश्य :

1. छात्रों को आलोचना के स्वरूप से परिचित कराना ।
2. हिंदी आलोचना के विकास का परिचय देना ।
3. हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचना पद्धतियों से अवगत कराना ।
4. हिंदी आलोचकों के प्रदेय से परिचित कराना ।
5. छात्रों में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कराना ।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा तथा परिचर्चा ।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों, संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग।
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठयक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. आलोचना : स्वरूप, उद्देश्य, आलोचना की प्रक्रिया।
2. आलोचना और अनुसंधान, आलोचक के गुण ।
3. हिंदी आलोचना का विकास क्रम, हिंदी आलोचना और सर्जनशील साहित्य। हिंदी आलोचना में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी योगदान।

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 01)

4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।

5. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 01)

6. डॉ. नंददुलारे वाजपेयी की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।

7. डॉ. नगेंद्र की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।

8. डॉ. रामविलास शर्मा की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषताएँ, हिंदी आलोचना में उनका योगदान

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 01)

9. डॉ. नामवर सिंह की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषताएँ, हिंदी आलोचना में उनका योगदान।

10. समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएँ : विडम्बना (आयरनी), अजनबीपन (एलियने"ान), विसंगति (एब्सर्ड), अंतर्विरोध (पैराडॉक्स), विखंडन(डीकन्स्ट्रक"ान)।

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 01)

कुल श्रेयांक / कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी आलोचना : स्वरूप और प्रक्रिया – आनंदप्रकाश दीक्षित
2. आचार्य शुक्ल के समीक्षा सिद्धांत – डॉ. रामलाल सिंह
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना– डॉ. रामविलास शर्मा
4. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीः व्यक्तित्व और साहित्य– डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त
5. आ. नंददुलारे वाजपेयीः व्यक्तित्व और साहित्य–डॉ.रामाधार शर्मा
6. हिंदी आलोचना का इतिहास – डॉ. रामदरश मिश्र
7. हिंदी आलोचना : उद्भव और विकास – भगवत स्वरूप मिश्र
8. हिंदी के विशिष्ट आलोचक – नंदकुमार राय
9. हिंदी आलोचना के आधार स्तंभ – डॉ. रामेश्वर खंडेलवाल
10. हिंदी की सैद्धांतिक समीक्षा – डॉ. रामाधार शर्मा
11. हिंदी की सैद्धांतिक आलोचना – डॉ. रूपकिशोर मिश्र
12. हिंदी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ – डॉ. रामदरश मिश्र
13. हिंदी आलोचना की परंपरा और आचार्य रामचंद्र शुक्ल –डॉ.शिवकुमार मिश्र
14. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी – संपा. विश्वनाथ तिवारी
15. डॉ. नगेंद्र के आलोचना सिद्धांत – नारायण प्रसाद चौबे
16. डॉ. रामविलास शर्मा – डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी
17. आलोचक रामविलास शर्मा – डॉ. नत्थन सिंह
18. पा"चात्य काव्य"ाास्त्र के अधुनातम संदर्भ– डॉ. सत्यदेव मिश्र
19. पा"चात्य साहित्य सिद्धांत विवेचन – डॉ. ओमप्रका"ा शर्मा
20. काव्य"ाास्त्र – डॉ. सुधाकर कलावडे
21. साहित्य अध्ययन की दृष्टियॉ– संपा. डॉ. उदय भानु सिंह, डॉ. उदयप्रका"ा
22. आधुनिकता बनाम उत्तर आधुनिकता– संपादक–डॉ. संजीव कुमार जैन तथा डॉ. मणिमोहन मेहता
23. आलोचना और आलोचना– देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, 21ए, दरियागंज, नई दिल्ली–2

———————————

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग–2)

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
IV	HIN 5401	प्रश्नपत्र 13 : सामान्य स्तर आधुनिक काव्य 2 (विशेष कवि कुँवर नारायण तथा नई कविता)	04

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र
प्रश्नपत्र 13 : सामान्य स्तर
आधुनिक काव्य 2
(विशेष कवि कंवर नारायण तथा नई कविता)
PAPER CODE : HIN 5401

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

पाठ्यक्रम

(शैक्षिक वर्ष : 2020–21 से)

उद्देश्य :

1. छात्रों को आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय कराना।
2. छात्रो को आधुनिक काल के प्रबंध और मुक्त काव्य के तात्विक स्वरूप की जानकारी देना।
3. आधुनिक युग में इन काव्य प्रकारों के विकासक्रम से परिचित कराना।
4. छात्रों को आधुनिक काव्य प्रकारों के तात्विक स्वरूप एवं विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में रचनाओं के आस्वादन, अध्ययन और मूल्यांकन की दृष्टि देना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग।
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन।
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

(1) विशेष कवि कुँवर नारायण
संपा. डॉ. सुरेश बाबर तथा डॉ. नीला बोर्वणकर
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, 21,दरियागंज ,नई दिल्ली

अध्ययनार्थ कविता :

1. चक्रव्यूह
2. जाड़ों की एक सुबह
3. अब की अगर लौटा तो
4. लगभग दस बजे रोज
5. कविता
6. भाषा की धस्त परिस्थितिकी में
7. कविता की जरूरत
8. महाभारत
9. अयोध्या – 1992
10. आठवीं मंजील पर
11. एक संक्षिप्त कालखंड में
12. नीम के फूल
13. स्पष्टीकरण
14. अमीर खुसरो
15. आजकल कबीरदास
16. रंगों की हिफ़ाजत
17. बाज़ारों की तरफ भी
18. शहर और आदमी
19. एक अजीब–सी मुश्किल में हूँ इन दिनों
20. काला और सफेद

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 01)

अध्ययनार्थ विषय :

1. कुँवर नारायण के काव्य में आधुनिक बोध
2. कुँवर नारायण के काव्य की वि"ोषताएँ
3. कुँवर नारायण के काव्य में वैचारिकता
4. कुँवर नारायण के काव्य की भाषा
5. कुँवर नारायण के काव्य का ि"ाल्प

(2) नई कविता संपा. डॉ. सुरेश बाबर तथा
डॉ. अलका पोतदार प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, 21,दरियागंज ,नई दिल्ली

अध्ययनार्थ कवि :

अ. लीलाधर जगूडी

1. पाटा
2. भरोसे की कविता
3. उदासी के खिलाफ़
4. डेढ़ रुपये की ताक़त
5. बीमारी जो गरीबी है
6. आधुनिक शब्द
7. एक और नामकरण

आ. उदय प्रकाश

1. कायदा
2. वर्तमान को धन्यवाद
3. सहानुभूति की मॉग
4. विद्वान लोग
5. सुनो कारीगर
6. मॉ
7. पिता

इ. कात्यायनी

1. बुजुर्ग राहगीर की कविता
2. आस्था का प्रश्न
3. गुड़ की डली
4. वे नहीं सोचते
5. आशावादी नागरिक की कविता
6. आम आदमी का प्यार
7. सौ साल कैसे जिये?

ई. दामोधर मोरे

1. मेरी प्यारी आज़ादी
2. मुझे बरदास्त नहीं होता
3. युगधर्म
4. शायरी और आमलेट
5. पहरा
6. सावित्री से सावित्री तक
7. मौत का पैगाम

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 01)

अध्ययनार्थ कविता के विषय :

1. नई कविता का अनुभूति पक्ष
2. नई कविता की शिल्प योजना
3. लीलाधर जगूड़ी के काव्य का कथ्य
4. लीलाधर जगूड़ी के काव्य का शैली पक्ष
5. उदय प्रकाश के काव्य की भावगत विशेषताएँ
6. उदय प्रकाश के काव्य की शिल्पगत विशेषताएँ
7. कात्यायनी के काव्य का भावपक्ष
8. कात्यायनी के काव्य का कलापक्ष
9. दामोदर मोरे के काव्य की संवेदना
10. दामोदर मोरे के काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 01)

कुल श्रेयांक / कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथ :

1. कुँवर नारायण : नैतिक संवेदना का द्वंद्व– पूनम सिंह
2. कुँवर नारायण का काव्य–'कोई दूसरा नहीं' का समीक्षात्मक अध्ययन–पुष्पलता
3. आत्मजयी–चेतना और शिल्प– विजया शर्मा
4. कुँवर नारायण और उनका साहित्य– अनिल मेहरोत्रा
5. नई कविता का बौद्धिक परिप्रेक्ष्य–कुँवर नारायण और विजयदेव
6. नारायण साही के विशेष संदर्भ में– गोरखनाथ पाण्डेय
7. कुँवर नारायण का रचना– संसार–एक समीक्षात्मक अनुशीलन–मिथलेश शरण चौबे
8. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर – डॉ. संतोषकुमार तिवारी
9. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
10. काव्य रूप संरचना : उद्भव और विकास – सुमन राजे
11. आधुनिक हिंदी काव्य में रूप विधाएँ – डॉ. निर्मला जैन
12 .हिंदी राम काव्य का स्वरूप और विकास :बदलते युग बोध के परिप्रेक्ष्य में – डॉ. प्रेमचंद्र महे"ा
13. संसद से सड़क तक और गोलपीठा– प्रा. अनंत केदारे
14. कुँवर नारायण–संसार – संपादन– यतींद्र मिश्र
15. कुँवर नारायण–उपस्थिति – संपादन– यतींद्र मिश्र
16 .तीसरा सप्तक – संपादक– अज्ञेय
17 .कुँवर नारायण–पचास कविताएँ– वाणी प्रका"ान, नई दिल्ली
18. हिंदी के आधुनिक कविः व्यक्तित्व और कृतित्व – रवींद्र भ्रमर
19. समकालीन हिंदी कविता में आम आदमी –जो"ाी मृदुल
20 .नई कविता का सौंदर्य बोध – डॉ. रेनू दीक्षित
21. अस्तित्ववादी स्वतंत्रता का प्रभामंडल और नई कविता– हनुमंतराय नीरव
22. नई कविता– पुरातन सूत्र – डॉ मानसिंह वर्मा
23. समकालीन हिंदी कविता – रवींद्र भ्रमर
24. नई कविता की प्रबंध–चेतना – डॉ महावीरसिंह चौहान
25 .नया हिंदी काव्य और विवेचन –"ांभुनाथ चतुर्वेदी नई कविता – देवराज
26. आधनिक हिंदी काव्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ बनवारीलाल द्विवेदी
27. सप्तक काव्य में व्यंग्य विधान – डॉ गिरीष महाजन
28 .आधुनिक खंडकाव्यों में युगचेतना – डॉ एन डी पाटील
29 .नागार्जुन के काव्य का अनुशीलन – डॉ. पूनम बोरसे
30. अज्ञेय से अरूण कमल – डॉ. संतोषकुमार तिवारी, भारती ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली

———————————————

अनेकांत एज्युके"ान सोसायटी,

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग–2)

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
IV	**HIN 5402**	प्रश्न पत्र 14 : विशेष स्तर हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास	**04**

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र
प्रश्नपत्र 14 : विशेष स्तर
हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास
PAPER CODE : HIN 5402
(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष : 2020–21 से)

उद्देश्य :

1. छात्रों को हिंदी भाषा का उद्भव एवं विकास तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय देना।
2. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनके वर्गीकरण से अवगत कराना।
3. भारतीय आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकास क्रम की जानकारी देना।
4. हिंदी बोलियों का वर्गीकरण तथा क्षेत्र से परिचित कराना।
5. हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप और विकास की जानकारी देना।
6. लिपि विज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट करना।
7. हिंदी प्रचार एवं प्रसार के आंदोलन की जानकारी देना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग।
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

1. हिंदी भाषा का उद्भव एवं विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः–प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ– वैदिक संस्कृत, लौकिक, संस्कृत सामान्य परिचय। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ : पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि का सामान्य परिचय।

(तासिकाएँ 15 घंटे =श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट– 01)

2. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण– हार्नली, ग्रियर्सन (अंतिम वर्गीकरण) चटर्जी और हरदेव बाहरी द्वारा किया गया वर्गीकरण। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का सामान्य परिचय।
3. हिंदी बोलियों का वर्गीकरण तथा क्षेत्र–अपभ्रं"ा (अवहट्ट सहित) और पुरानी हिंदी का संबंध, पूर्वी हिंदी व पश्चिमी हिंदी की तुलना, खड़ीबोली, ब्रज और अवधी की व्याकरणिक विशेषताएँ।

(तासिकाएँ 15 घंटे =श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट– 01)

4. हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप और विकास : रूप रचना– लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियारूप तथा अव्ययों का विकास । हिंदी में शब्द निर्माण : उपसर्ग, प्रत्यय, समास।

(तासिकाएँ 15 घंटे =श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट– 01)

5. लिपि विज्ञान : लिपि का उद्भव और विकास, खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपि। देवनागरी लिपि – उद्भव और विकास। देवनागरी लिपि की विशेषताएँ।
6. हिंदी प्रसार के आंदोलन : प्रमुख व्यक्तियों तथा संस्थाओं का योगदान,राजभाषा के रूप में हिंदी, राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति।

(तासिकाएँ 15 घंटे =श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट– 01)

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

———————————————————

संदर्भ ग्रंथ :

1. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान – डॉ. राजमल बोरा
3. भाषा विज्ञान की भूमिका–सैद्धांतिक विवेचन–डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
4. भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ. त्रिलोचन पांडेय
5. भाषा विज्ञान– सैद्धांतिक विवेचन – रवींद्र श्रीवास्तव
6. भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
7. भाषा विज्ञान और भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
8. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. केशवदेव रूपाली
9. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. विश्वदेव त्रिगुणायत
10. भाषा विज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
11. सामान्य भाषा विज्ञान – डॉ. बाबूराम सक्सेना
12. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. कृपाशंकर सिंह
13. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिध्दांत – डॉ. रामकिशोर शर्मा
14. भाषा और भाषा विज्ञान – डॉ. तेजपाल चौधरी
15. भाषा–ब्लूमफील्ड (अनुवादक– डॉ. विश्वनाथ प्रसाद)
16. हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
17 .हिंदी भाषा का उद्भव और विकास– डॉ. उदयनारायण तिवारी
18 .हिंदी का उद्भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी
19 .हिंदी की ग्रामीण बोलियाँ – डॉ. हरदेव बाहरी
20. हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप– डॉ अंबाप्रसाद' सुमन'
21. हिंदी भाषा – कैलाशचंद्र भाटिया
22. हिंदी भाषा का इतिहास – डॉ. भोलानाथ तिवारी
23. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले
24. नागरी लिपि रूप और सुधार – मोहन ब्रिज
25. नागरी लिपि का उद्भव और विकास– डॉ. ओमप्रकाश भाटिया
26. नागरी की लिपि संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी
27. भारत की भाषाएँ – डॉ. राजमल बोरा

———————————————

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग–2)

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
IV	HIN 5403	प्रश्नपत्र 15 विशेष स्तर – हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	04

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र
प्रश्नपत्र 15 : विशेष स्तर
हिंदी साहित्य का इतिहास
(आधुनिक काल)
PAPER CODE : HIN 5403

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

पाठ्यक्रम

(शैक्षिक वर्ष : 2020–21 से)

उद्देश्य :

1. छात्रों को हिंदी गद्य के अविर्भाव के प्रधान कारणों, परिस्थितियों का परिचय देना।
2. विषयवस्तु, भाषा शैली, शिल्प, विचारधारा, प्रभाव ग्रहण आदि के परिप्रेक्ष्य में प्रवृत्तियों को समझाते हुए हिंदी की प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम से परिचित कराना तथा प्रमुख गद्यकारों का परिचय देना।
3. आधुनिक हिंदी कविता के विकास के प्रमुख चरणों की प्रवृत्तियों, उपलब्धियों तथा सीमाओं से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग।
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन।
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

(क)1. हिंदी गद्य का निर्माण हिंदी गद्य के आविर्भाव के लिए प्रेरक परिस्थितियाँ 1857 की राज्य क्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण।

2. भारतेंदु पूर्व काल के हिंदी गद्य का सामान्य परिचय – विशेषताएँ, प्रमुख गद्यकार, फोर्ट विलियम कॉलेज, ईसाई मिशनरी, आर्य समाज, ब्राह्मो समाज आदि का योगदान और हिंदी गद्य।
3. भारतेंदुयुगीन गद्य– साहित्य का स्वरूप और विशेषताएँ।
4. द्विवेदीयुगीन हिंदी साहित्य – साहित्य का स्वरूप और सामान्य विशेषताएँ, साहित्य विषयक मान्यता, राष्ट्रीय भावना, सुधारवादी दृष्टि, भाषा सुधार।

सूचना – उपर्युक्त चार विषय केवल स्वाध्याय के लिए है।

श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट– 01

अध्ययनार्थ विषय :

(ख) हिंदी गद्य विधाओं का विकास :

1. हिंदी उपन्यास साहित्य का विकास : प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग (संबंधित युग के उपन्यास साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रमुख उपन्यासकारों का विशेष परिचय प्रेमचंद, जैनेंद्रकुमार, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, यशपाल, वृंदावनलाल वर्मा, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ रेणु, रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, राहीमासूम रज़ा,श्रीलाल शुक्ल, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती ।
2. हिंदी कहानी साहित्य का परिचय : प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, प्रमुख कहानी आंदोलन बीसवीं सदी तक, (संबंधित युग के कहानी साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रमुख कहानीकारों का विशेष परिचय : प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्रकुमार, कमलेश्वर, उषा प्रियंवदा, ज्ञानरंजन, उदय प्रकाश।
3. हिंदी नाटक और रंगमंच का उद्भव और विकास : भारतेंदुपूर्व युग, भारतेंदु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के नाट्य साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रमुख नाटककारों का विशेष परिचय : भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, जगदीशचंद्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण मिश्र, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष, सुरेंद्र वर्मा।

4. हिंदी निबंध का इतिहास : भारतेंदुपूर्व युग, भारतेंदु युग, शुक्लयुग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के निबंध साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रमुख निबंधकारों का विशेष परिचय :पं प्रतापनारायण मिश्र, आ. रामचंद्र शुक्ल, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, हरिशंकर परसाई।
5. हिंदी की अन्य गद्य विधाएँ–एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रासाहित्य, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज।

(तासिकाएँ 30 घंटे = श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट– 02)

(ग) आधुनिक हिंदी काव्य का विकास :

1. भारतेंदुयुगीन कविता : सामान्य प्रवृत्तियाँ, भारतेंदुयुगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
2. द्विवेदीयुगीन हिंदी कविता : सामान्य प्रवृत्तियाँ द्विवेदी युगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – मैथिलीशरण गुप्त, पं. श्रीधर पाठक
3. राष्ट्रीय काव्यधारा : सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय– माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर'
4. छायावादी कविता : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्तियाँ, सीमाएँ प्रमुख छायावादी कवियों का सामान्य परिचय – पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा।
5. प्रगतिवादी कविता : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्तियाँ, सीमाएँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल।

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट– 01)

6. प्रयोगवादी कविता : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्तियाँ तथा प्रमुख कवि।
7. नई कविताः सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय –अज्ञेय,मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय।
8. साठोत्तरी कविता सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय– धूमिल, दुष्यंतकुमार, लीलाधर जगुडी, केदारनाथ सिंह, चंद्रकांत देवताले, मंगलेश डबराल।
9. समकालीन कविता की विशेषताएँ और प्रमुख कवि।

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट– 01)

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

———————————————

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – सपां. डॉ. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
4. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
5. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
6. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्यामचंद्र कपूर (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
7. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
8. हिंदी साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ – डॉ. गोविंदराम शर्मा
9. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशनप्रसाद खंडेलवाल
10. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबू गुलाबराय
11. आधुनिक साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
12. हिंदी साहित्य की भूमिका – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
13. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा
14. हिंदी गद्य : उद्भव और विकास – डॉ. उमेश शास्त्री
15. हिंदी साहित्य : एक परिचय – डॉ. त्रिभुवन सिंह
16. हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास– डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
17. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
18. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य – रामरतन भटनागर
19. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिवकुमार शर्मा
20. हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास – डॉ. सभापति मिश्र
21. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. माधव सोनटक्के
22. हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास – डॉ. मोहन अवस्थी
23. हिंदी साहित्य का सही इतिहास–डॉ.चंद्रभानु सोनवने, सूर्यनारायन रणसुभे
24. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास – डॉ. सुमन राजे
25. हिंदी साहित्य की नवीन विधाएँ – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
26. हिंदी साहित्य का इतिहास : नए विचार नई दिशाएँ – डॉ. सुरेशकुमार जैन
27. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सज्जनराम केणी
28. हिंदी साहित्य – डॉ. धर्मवीर भारती
29. मैथिलीशरण गुप्त के खंडकाव्यों का अनुशीलन–डॉ. योगिता हिरे
30. यशपाल के उपन्यासः गवेषणात्मक अध्ययन– डॉ. अनिता नेरे

31. साठोत्तरी हिंदी कथासाहित्य :स्त्री विमर्श–संपा.डॉ.अनितानेरे, डॉ.योगिता हिरे
32. मार्कंडेय का कथा साहित्य और ग्रामीण सरोकार– डॉ. जिभाऊ मोरे
33. आलोचना और आलोचना–देवीशंकर अवस्थी,वाणी प्रकाशन, 21–ए,दरियागंज, नई दिल्ली–2
34. अंतिम दशक की हिंदी कहानियॉ संवेदना और शिल्प– डॉनीरज शर्मा, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, दिल्ली–2
35. हिंदी नाटक और रंगमंच– संपा. धीरेंद्र शुक्ल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,337, चौड़ा रास्ता, जयपुर–3
36. हिंदी साहित्य संक्षिप्त इतिवृत्त– शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–2
37. अंतिम दो दशकों का हिंदीसाहित्य–संपा.मीरा गौतम, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–2
38. हिंदी नाटक आज तक– डॉ. वीणा गौतम, शब्द सेतु, ए–139, गली नं. 3, कबीर नगर, दिल्ली– 94
39. बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य–विजयमोहन सिंह, राजकमल प्रका. प्रा लि 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली

————————————————

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग–2)

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
IV	HIN 5404	प्रश्नपत्र 16 विशेष स्तर – वैकल्पिक : लोकसाहित्य	04

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र
प्रश्नपत्र 16 : विशेष स्तर
वैकल्पिक
(ख) लोकसाहित्य
PAPER CODE : HIN 5404

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

पाठ्यक्रम

(शैक्षिक वर्ष : 2020–21 से)

उद्देश्य :

1. छात्रों को लोकसाहित्य के स्वरूप तथा उसके अध्ययन के महत्व से परिचित कराना।
2. लोकसाहित्य की विविध विधाओं की जानकारी देना तथा लोकजीवन में उसकी व्यापकता समझाना।
3. लोकसाहित्य का महत्व समझाकर उसके विशेष अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
4. महाराष्ट्र के लोकसाहित्य से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग।
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन।
5. लोक–साहित्यकारों से साक्षात्कार।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. 'लोक' शब्द की व्युत्पत्ति, स्वरूप, लोकसाहित्य का स्वरूप – परिभाषाएँ तथा विशेषताएँ, लोकसाहित्य और शिष्ट साहित्य में साम्य–भेद, लोकवार्ता का स्वरूप, लोकसाहित्य का महत्व।
2. लोकसाहित्य और अन्य ज्ञानशाखाओं का परस्पर संबंध – इतिहास, पुरातत्व, मानव विज्ञान, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, भाषा विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र।
3. लोकसाहित्य संकलन : उद्देश्य, संकलन की पद्धतियाँ, संकलनकर्ता की क्षमताएँ, संकलनकर्ता के लिए उपयुक्त साधन सामग्री, संकलनकर्ता की समस्याएँ तथा समाधान।

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट–01)

4. लोकगीत : परिभाषाएँ, विशेषताएँ और प्रेरणा स्रोत, लोकगीत और शिष्टगीत में अंतर, लोकगीतों के वर्गीकरण की पद्धतियाँ, लोकगीतों का परिचय– सोहर, मुंडन, विवाह, गौना, होली, सावनगीत आदि।
5. लोकगाथा : परिभाषाएँ एवं स्वरूप, लोकगाथा के उत्पत्तिविषयक सिद्धांत, किसी एक लोकगाथा का सामान्य परिचय – ढोला–मारू रा दूहा, नल–दमयंती, लैला–मजनू, हीर–राँझा, सोहनी–महीवाल, लोरिक–चंदा आदि।

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट–01)

6. लोककथा : परिभाषा एवं स्वरूप, विशेषताएँ, लोककथा में अभिप्राय का महत्व, लोककथा के उत्पत्तिविषयक सिद्धांत,लोककथाओं का वर्गीकरण।
7. लोकनाट्य : परिभाषा एवं स्वरूप, विशेषताएँ, लोकनाट्य और शास्त्रीय नाटक में अंतर, लोकनाट्यों का परिचय– रामलीला, रासलीला, कीर्तन, यक्षगान, जात्रा, भवाई, ख्याल, माँच, नौटंकी, कुचिपुड़ी।
8. महाराष्ट्र का लोकनाट्य– तमाशा, गोंधळ, लावनी, पोतराज, सुंबरान, वासुदेव, भारूड, लळित, द"ाावतार, पोवाडा, कीर्तन आदि।

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट–01)

9. प्रकीर्ण लोकसाहित्य : मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ, मुकरियाँ, सूक्तियाँ, ढकोसले, चुटकुले, मंत्र, टोना आदि का परिचय।
10. लोकसाहित्य का कलापक्ष : भावव्यंजना, रस परिपाक, भाषा, अलंकार–योजना, छंद–विधान, प्रतीकात्मकता आदि दृष्टियों से विवेचन।

(तासिकाएँ 15 घंटे = श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट–01

कुल श्रेयांक / कर्मांक = 04

———————————

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारतीय लोकसाहित्य – डॉ. श्याम परमार
2. लोकसाहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
3. लोकसाहित्य : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. श्रीराम शर्मा
4. लोक साहित्य के प्रतिमान – डॉ. कुंदनलाल उप्रैति
5. खडीबोली का लोकसाहित्य – डॉ. सत्यगुप्त
6. लोकसाहित्य का विज्ञान – डॉ. सत्येंद्र
7. लोकवार्ता और लोकगीत – डॉ. सत्येंद्र
8. लोकसाहित्य का अध्ययन – डॉ. त्रिलोचन पांडेय
9. लोकसाहित्य – प्राचार्य डॉ. बापूराव देसाई, विकास प्रकाशन,110 / 138 मिश्रा पॅलेश, जवाहर नगर, कानपुर––208012

———————